न किलानुययुस्तस्य राजानो रक्षितुर्यशः ।

व्यावृत्ता यत्परस्वेभ्यः श्रुतौ तस्करता स्थिता ।।27।।

अन्वय राजानः रक्षितुः तस्य यशः न अनुययुः किल यत् तस्करता परस्वेभ्यः व्यावृत्ता श्रुतौ स्थिता (बभूव)।

अनुवाद विपत्तियों से प्रजा की रक्षा करने वाले राजा दिलीप के यज्ञ का अनुकरण अन्य राजा न कर सके (दिलीप के समान यशस्वी न हो सके) क्योंकि दिलीप के राज्य में चोरी पराये धन से हट कर केवल सुनने में (कथा आदि में) ही रह गई (दिलीप के राज्य में चोरी नहीं होती थी)। (अतः चोरी वास्तव में नहीं होती थी, केवल उसका नाम ही था)।

टिप्पणियां

अनुययुः अनु उपसर्ग धातु या लिट्, अन्य पुरुष, बहुवचन, अनुकरण किया, बराबरी कर सके।

व्यावृत्ताः इस पंक्ति की व्याख्या दो प्रकार से की जा सकती है। (1) दूसरों के धन से हटी हुई तस्करता (चोरी) केवल शब्द में ही रहती थी (भाव यह है कि दिलीप के राज्य में कहीं भी कभी चोरी नहीं होती थी। इसलिए मानो 'तस्करता' शब्द की ही चोरी हो गई थी)। (2) व्यवहार में कभी चोरी नहीं होती थी। अतः तस्करता (चोरी) केवल

वाचक शब्द के ही रूप में विद्यमान थी। शब्द के व्यावहारिक अर्थ के रूप में नहीं। तस्करता शब्द केवल सुनने में ही रह गया था वास्तविक रूप में कभी चोरी होती देखी नहीं गई।

व्यावृत्ताः वि उपसर्ग धातु वृत् क्त टाप्, हटी हुई, दूर हुई।

परस्वेभ्यः दूसरो (पर) के धन (स्व) से।

तस्करता तत् कर। तत् तथा वृहत् के उपरान्त यदि 'कर' तथा 'पति' आये तो उनका अर्थ क्रमशः चोर तथा देवता हो जाता है। तथा अन्तिम त् का लोप होकर सुट् का आगम होता है।